काव्यखंड

भिगो दूँगी अग-जग के छोर

बात बोलेगी

हम नहीं,

भेद खोलेगी

बात ही ।

– शमशेर बहादुर सिंह

मलिक मुहम्मद जायसी

जन्म	:	15वीं शती उत्तरार्ध, अनुमानतः 1492 ।
निधन	:	1548 अनुमानतः ।
निवास-स्थान	:	जायस, कब्र अमेठी, उत्तर प्रदेश ।
पिता	:	मलिक शेख ममरेज (मलिक राजे अशरफ) ।
गुरु	:	सूफी संत शेख मोहिदी और सैयद अशरफ जहाँगीर ।
वृत्ति	:	आरंभ में जायस में रहते हुए किसानी, बाद में शेष जीवन फकीरी में, बचपन में ही अनाथ, साधुओं-फकीरों के साथ भटकते हुए बचपन बीता ।
व्यक्तित्व	:	चेचक के कारण रूपहीन तथा बाईं आँख और कान से वंचित । मृदुभाषी, मनस्वी और स्वभावतः संत ।
कृतियाँ	:	पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानामा (महरी बाईसी), मसला या मसलानामा (खंडित प्रति प्राप्त) । इनके अतिरिक्त चंपावत, होलीनामा, इतरावत आदि कृतियाँ भी उल्लेख में आती हैं ।

लोकजीवन में प्रचलित प्रेमकथाओं को आधार बनाकर छंदोबद्ध कथाकाव्य लिखने की परिपाटी प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में ही रही थी । संभव है, वह संस्कृत में भी रही हो । यह परिपाटी साधारण जन-जीवन के प्रत्यक्ष अभिप्रेरण और संरक्षण में आगे उत्तरोत्तर बढ़ती हुई हिंदी में अव्याहत चलती चली आई । इसे हिंदी में प्रेमाख्यानक काव्य कहते हैं । चौपाई-दोहा आदि की कड़बक शैली में निबद्ध ये काव्य प्रायः अवधी में मिलते हैं । किसानों और कारीगरों की भाषा अवधी में ब्रज की गीतिमयता ओर कोमलता की तुलना में कथावृत्तों को विवरण और विस्तार में सहेज सकने की क्षमता थी । इस्लाम और उसके साथ तसव्वुफ (सूफी मत) के आगमन के बाद इसी प्रेमाख्यानक काव्य-परंपरा में अनेक मुसलमान कवि हुए जिन्होंने पहले से जन-प्रचलित प्रेम कहानियों को सूफी प्रेम साधना के अभिप्रायों से संबलित कर काव्य के रूप दिए.। मुल्ला दाउद से लेकर जानकवि और उससे भी आगे तक यह परंपरा अबाध रूप से चलती रही । मलिक मुहम्मद जायसी इस परंपरा की अन्यतम कड़ी हैं ।

जायसी के लिखे अनेक काव्य प्राप्त होते हैं जो आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ० माताप्रसाद गुप्त आदि अनेक विद्वानों द्वारा अलग-अलग 'जायसी ग्रंथावली' के नाम से संपादित हैं । जायसी की उज्ज्वल अमर कीर्ति का आधार है उनका महान कथाकाव्य 'पद्मावत' जिसमें चित्तौड़ नरेश रतनसेन और सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा है । इस प्रेमकथा का त्रिकोण पूरा होता है दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन के इस कहानी से जुड़ जाने से । अंशतः ऐतिहासिक आधार वाली इस कहानी का विकास जनश्रुतियों एवं आगे स्वयं कवि की सर्जनात्मक कल्पना द्वारा हुआ है ।

मलिक मुहम्मद जायसी 'प्रेम की पीर' के कवि हैं । मार्मिक अंतर्व्यथा से भरा हुआ यह प्रेम अत्यंत व्यापक,

गूढ़ आशयों वाला और महिमामय है । यह प्रेम अनुभूतिमय, रासायनिक एवं इस अर्थ में क्रांतिकारी है कि यह विभिन्न पात्रों को अमिट चरित्रों के रूप में निखारते हुए उन्हें एक दिशा देकर परिणतियों तक पहुँचा देता है । 'पद्मावत' के आख्यान में सजीव कहानी का मर्मस्पर्शी वेदनामय रस है और चरित्रों, उनके सुलगते-दहकते मनोभावों के दुर्निवार प्रभाव हैं जो पाठकों-श्रोताओं को अपने लपेटे में ले लेते हैं । इस प्रेमाख्यानक काव्य द्वारा विद्वेष और कलह के उस यंत्रणामय कठिन समय में धार्मिक-सांस्कृतिक-सामाजिक सद्भाव और साझेदारी की एक ऐसी जमीन जायसी ने तैयार की जो हमारी बहुमूल्य विरासत का हिस्सा है । जायसी की इस प्रेम कहानी में प्राणों का प्राणों से, हृदय का हृदय से, मर्म का मर्म से और जीवन विवेक का जीवन विवेक से ऐसा मानवीय मेल है जो उनके काव्य को बहुत ऊँचा उठा देता है और उसमें व्यापकता और गहराई एक साथ ला देता है । खाँड़ जैसी मीठी और खालिस अवधी में लिखे गए इस काव्य में कवि की विशालहृदयता, मार्मिक अंतर्दृष्टि और लोकजीवन के विस्तृत ज्ञान की अभिव्यक्ति हुई है ।

यहाँ प्रस्तुत दो कड़बक अलग-अलग संकलित हैं । ये पद्मावत के क्रमशः प्रारंभिक और अंतिम छंदों में से हैं, किंतु कवि और काव्य की विशेषताएँ निरूपित करते हुए दोनों के बीच एक अद्वैत की व्यंजना करते हैं । प्रारंभिक स्तुतिखंड से लिए गए प्रथम कड़बक में कवि एक विनम्र स्वाभिमान के साथ अपनी रूपहीनता और एक आँख के अंधेपन को प्रकृतिप्राप्त दृष्टांतों द्वारा महिमान्वित करते हुए रूप से अधिक अपने गुणों की ओर हमारा ध्यान खींचते हैं । इन गुणों के ही कारण 'पद्मावत' जैसे मोहक काव्य की रचना हो सकी ।

अंत के उपसंहार खंड से लिए गए द्वितीय कड़बक में कवि अपने काव्य और उसकी कथासृष्टि के बारे में हमें बताते हैं । वे कहते हैं कि उन्होंने इसे रक्त की लेई लगाकर जोड़ा है जो गाढ़ी प्रीति के नयनजल में भिगोई हुई है । अब न वह राजा रत्नसेन हैं और न वह रूपवती पद्मावती रानी है, न वह बुद्धिमान सुआ है और न राघवचेतन या अलाउद्दीन ही । इनमें कोई आज नहीं रहा किंतु उनके यश के रूप में कहानी रह गई है । फूल झड़कर नष्ट हो जाता है पर उसकी खुशबू रह जाती है । कवि यह कहना चाहता है कि एक दिन वह भी नहीं रहेगा पर उसकी कीर्ति सुगंध की तरह पीछे रह जाएगी । जो भी इस कहानी को पढ़ेगा वही उसे दो शब्दों में स्मरण करेगा । कवि का अपने कलेजे के खून से रचे इस काव्य के प्रति यह आत्मविश्वास अत्यंत सार्थक और बहुमूल्य है ।

◆ ◆ ◆

> **"जायसी के माध्यम से हिंदी साहित्य ने न सिर्फ अपने युग की, बल्कि युगों के भीतर कड़कती हुई मानवीय विषाद की तस्वीर देखी जिसमें निष्कलंक आदर्श भी हैं और बहुत कड़वे यथार्थ भी हैं, झिलमिलाती यूटोपिया भी है और रिश्वतखोरी पर चलते हुए कारागार भी हैं, सत और साका भी है और छल से भरा हुआ विध्वंसकारी राजहठ भी है । इस कवि की निर्मलता इसमें नहीं है कि जायसी सिर्फ चुनी हुई निष्कलंक चीजें देखते हैं, बल्कि इसमें है कि अच्छा-बुरा जो कुछ भी है, अपनी विविधता के साथ संपूर्ण परिदृश्य का अंग हो गया है ।"**
>
> **–विजयदेव नारायण साही**

कड़बक

(1)

एक नैन कबि मुहमद गुनी । सोइ बिमोहा जेइँ कबि सुनी ।
चाँद जइस जग बिधि औतारा । दीन्ह कलंक कीन्ह उजिआरा ।
जग सूझा एकइ नैनाहाँ । उवा सूक अस नखतन्ह माहाँ ।
जौं लहि अंबहि डाभ न होई । तौ लहि सुगंध बसाइ न सोई ।
कीन्ह समुद्र पानि जौं खारा । तौ अति भएउ असूझ अपारा ।
जौं सुमेरु तिरसूल बिनासा । भा कंचनगिरि लाग अकासा ।
जौं लहि घरी कलंक न परा । काँच होइ नहिं कंचन करा ।
एक नैन जस दरपन औ तेहि निरमल भाउ ।
सब रूपवंत गहि मुख जोवहिं कइ चाउ ।।

(2)

मुहमद यहि कबि जोरि सुनावा । सुना जो पेम पीर गा पावा ।
जोरी लाइ रकत कै लेई । गाढ़ी प्रीति नैन जल भेई ।
औ मन जानि कबित अस कीन्हा । मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा ।
कहाँ सो रतनसेनि अस राजा । कहाँ सुवा असि बुधि उपराजा ।
कहाँ अलाउद्दीन सुलतानू । कहँ राघौ जेइँ कीन्ह बखानू ।
कहँ सुरूप पदुमावति रानी । कोइ न रहा जग रही कहानी ।
धनि सो पुरुख जस कीरति जासू । फूल मरै पै मरै न बासू ।
केइँ न जगत जस बेंचा केइँ न लीन्ह जस मोल ।
जो यह पढ़ै कहानी हम सँवरै दुइ बोल ।।

अभ्यास

कड़बक के साथ

1. कवि ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से क्यों की है ?
2. पहले कड़बक में कलंक, काँच और कंचन से क्या तात्पर्य है ?
3. पहले कड़बक में व्यंजित जायसी के आत्मविश्वास का परिचय अपने शब्दों में दें ।
4. कवि ने किस रूप में स्वयं को याद रखे जाने की इच्छा व्यक्त की है ? उनकी इस इच्छा का मर्म बताएँ।
5. भाव स्पष्ट करें :-
   ''जौं लहि अंबहि डांभ न होइ । तौ लहि सुगंध बसाइ न सोई ॥''
6. 'रकत कै लेई' का क्या अर्थ है ?
7. 'मुहमद यहि कबि जोरि सुनावा ।' –यहाँ कवि ने 'जोरि' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया है ?
8. दूसरे कड़बक का भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें ।
9. व्याख्या करें –
   ''धनि सो पुरुख जस कीरति जासू । फूल मरै पै मरै न बासू ॥''

कड़बक के आस-पास

1. पद्मावत की कथा अपने शिक्षक से मालूम करें और उसे सार रूप में अपनी कॉपी में लिखें ।
2. जायसी प्रेममार्गी धारा के श्रेष्ठ कवि हैं, इस धारा के पाँच अन्य कवियों और उनकी पुस्तकों के नाम अपने शिक्षक से मालूम करें ।
3. पठित कड़बकों के आधार पर जायसी की कैसी छवि आपके मन में उभरती है ? यह भी विचारें कि एक व्यक्ति के किन गुणों को याद रखा जाता है ?
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की पुस्तक 'त्रिवेणी' में तीन भक्तिकालीन कवियों–जायसी, सूर और तुलसी के साहित्यिक अवदान का परिचय दिया गया है । आचार्य शुक्ल जायसी पर विचार करने वाले प्रमुख आलोचक हैं । जायसी के संबंध में उनके विचारों की जानकारी अपने शिक्षक से प्राप्त करें ।
5. जायसी एक सूफी साधक हैं, सूफी मत और प्रमुख सूफी संतों के बारे में जानकारी एकत्र करें, प्रमुख सूफी संतों की जीवनियाँ लिखकर विद्यालय के बोर्ड पर चिपकाएँ ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची लिखें –
   नैन, आम, चंद्रमा, रक्त, राजा, फूल
2. पहले कड़बक में कवि ने अपने लिए किन उपमानों की चर्चा की है, उन्हें लिखें ।
3. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखें, जैसे–तिरसूल का त्रिशूल ।
   नैन, दरपन, निरमल, पानि, नखत, पेम, रकत, कीरति, पुरुख

4. दोनों कड़बकों के रस और काव्य गुण क्या हैं ?
5. पहले कड़बक से संज्ञा पदों को चुनें ।
6. दूसरे कड़बक से सर्वनाम पदों को चुनें ।
7. जायसी के 'पद्मावत' और तुलसी के 'मानस' दोनों की भाषा अवधी है । पर दोनों महाकवियों के भाषिक संस्कार भिन्न हैं । यह भिन्नता क्या है ? अपने शिक्षक से मालूम करें ।

शब्द निधि

गुनी	:	गुणी, गुणशाली
सोइ	:	वही
जेइँ	:	जिसने
जइस	:	जैसा
जग	:	संसार
बिधि	:	ईश्वर (विधाता)
औतारा	:	अवतरण दिया, जन्म दिया
दीन्ह	:	दिया
सूझा	:	देखा
उवा	:	उदित
सुक	:	शुक, शुक्र नामक तारा
नखतन्ह माहाँ	:	नक्षत्रों के मध्य
जौं लहि	:	जब तक
अंबहि	:	आम में
डाभ	:	आम का नुकीलापन, फूटती हुई मंजरी
तिरसूल	:	त्रिशूल
घरी	:	घरिया, घड़िया जिसमें स्वर्णकार कोयले की आग सुलगाकर सोने को तपाकर खरा बनाता है
कलंक	:	कोयला
काँच	:	कच्ची धातु, कच्चा (बिना तपाया हुआ) सोना
करा	:	खरा, कड़ा, कठोर
निरमल	:	निर्मल, मैल से मुक्त, साफ
पेम	:	प्रेम
पीर	:	पीड़ा
रकत	:	रक्त
लेई	:	गोंद
मकु	:	मुझे
कीरति	:	कीर्ति
केंइ	:	किसने
बेंचा	:	बेचा (बेचना)